Content

अनुक्रमणिका

अनुक्रमणिका

विषय क्रम	पृष्ठ संख्या
प्रस्तावना :	i - vi
प्रथम अध्याय : विषय प्रवेश	1 - 20
❖ नाटक का स्वरूप	
❖ हिन्दी नाटक और रंगमंच का विकास : मोहन राकेश तक	
❖ हिन्दी नाट्य परंपरा में राकेश के नाटकों का महत्त्व	
❖ कलम के सिपाही : मोहन राकेश	
❖ आत्म-बिम्ब	
द्वितीय अध्याय : समय के निकष पर मोहन राकेश के नाटक	21 - 52
❖ मोहन राकेश के नाटकों में समय के विविध आयाम	
❖ कलाकार और राजसत्ता	
❖ सृजनशील व्यक्ति और परिवेश	
❖ 'आषाढ़ का एक दिन' में अभिव्यक्त समकालीन जीवन के अन्य सरोकार	
❖ 'लहरों के राजहंस' में समसामयिक प्रसंग	
❖ आधुनिक जीवन का प्रखर दस्तावेज़ : 'आधे-अधूरे'	
❖ 'पैर तले की जमीन' में अभिव्यक्त आधुनिक भावबोध	
❖ निष्कर्ष एवं मूल्यांकन	
तृतीय अध्याय : मोहन राकेश की रंगदृष्टि :	53 - 87
❖ मौलिक और निजी रंगदृष्टि की तलाश	
❖ नई नाट्यभाषा की खोज	
❖ राकेश के नाटकों में प्रयुक्त विविध रंग युक्तियाँ	
❖ पात्र-योजना	
❖ नाट्य-शिल्प	
❖ रंग संकेत	
❖ निष्कर्ष एवं मूल्यांकन	
चतुर्थ अध्याय : स्त्री विमर्श :	88 - 115
❖ स्वातंत्र्योत्तर भारत में स्वाधीन स्त्री का आविर्भाव	

❖ राकेश के नाटकों में स्त्री अस्मिता के विविध आयाम
❖ स्त्री-पुरूष संबंध
❖ निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

पंचम अध्याय : मोहन राकेश के नाटकों के प्रमुख प्रस्तुतीकरण एवं प्रस्तुति समीक्षाएँ 116 - 171

❖ मोहन राकेश के नाटकों के विविध प्रदर्शन
❖ 'आषाढ़ का एक दिन' :लेखकीय
❖ निर्देशक, अभिनेता एवं समीक्षक की नज़र में 'आषाढ़ का एक दिन'
❖ 'आषाढ़ का एक दिन' की विभिन्न प्रस्तुतियों का तुलनात्मक अध्ययन
❖ 'लहरों के राजहंस' : लेखकीय
❖ 'लहरों के राजहंस' : निर्देशकों एवं समीक्षकों के विचार
❖ 'लहरों के राजहंस' की विभिन्न प्रस्तुतियों का विवेचनात्मक अध्ययन
❖ लेखक, निर्देशक एवं समीक्षक के आईने में 'आधे-अधूरे'
❖ 'आधे-अधूरे' की प्रमुख प्रस्तुतियों की समीक्षा
❖ 'पैर तले की जमीन' : निर्देशक एवं समीक्षक की नज़र से
❖ 'पैर तले की जमीन' की प्रस्तुतियों का विश्लेषण

षष्ठ अध्याय : मोहन राकेश की एकांकियों,बीज नाटकों तथा ध्वनि नाटकों का कथ्य एवं रंगशिल्प 172 - 209

❖ एकांकी, बीज नाटकों एवं ध्वनि नाटकों में अभिव्यक्त राकेश का बहुस्तरीय लेखन
❖ 'रात बीतने तक' तथा अन्य ध्वनि नाटकों का आलोचनात्मक अध्ययन
❖ 'अंडे के छिलके' तथा अन्य एकांकियों का कथ्य एवं रंगशिल्प
❖ बीजनाटकों-'शायद' तथा 'हः ' की अन्तर्वस्तु एवं शिल्प
❖ पार्श्व नाटक, 'छतरियाँ' की समीक्षा
❖ निष्कर्ष एवं मूल्यांकन

उपसंहार 210 - 219

परिशिष्ट 220 - 225